M.A. Semester – I
Philosophy CC - 01

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

हेत्वाभास क्या है एवं उसके विभिन्न प्रकारों को उदाहरण सहित समझायें।

भारतीय प्रमाणशास्त्र में अनुमान का महत्वपूर्ण स्थान है तथा अनुमान का मेरुदण्ड हेतु को माना जाता है। यही अनुमान का मुख्य सूत्रधार होता है क्योंकि हेतु के प्रत्यक्ष के बाद ही अनुमान की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और उसके आधार पर साध्य को अनुमिति किया जाता है परन्तु जिस हेतु पर अनुमान की सारी प्रक्रिया टिकी होती है और जो ही साध्य की अनुमिति का प्रमुख आधार होता है वही दोषपूर्ण हो यानी उसमें सद्हेतु के लक्षण न होकर सिर्फ हेतु होने का एक आभास हो तो स्वतः सारा अनुमान दोषपूर्ण हो जायेगा। अनुमान के ऐसे ही दोष को भारतीय परम्परा में हेत्वाभास की संज्ञा दी गयी है।

व्युत्पति के आधार पर हेत्वाभास शब्द दो प्रकार से निष्पन्न होता है (1) हेतोराभासः तथा हेतुवद आभासन्ते इति हेत्वाभासः। प्रथम व्युत्पति के अनुसार हेतु के आभास अर्थात् हेतुमत दोष तथा द्वितीय व्युत्पति के अनुसार जो वस्तुतः हेतु न होते हुए भी हेतु के समान प्रतीत होता है वह दुष्ट हेतु हेत्वाभास कहलाता है यह अनुमान के दोषपूर्ण होने की स्थिति है।

हेत्वाभास के लक्षण के सम्बन्ध में इसी उपर्युक्त व्युत्पत्ति को ही विभिन्न दार्शनिक विचारक अपने-अपने ढंग से प्रकट करते हैं। जैसे कणाद ने वैशेषिक सूत्र में कहा है कि वही हेतु उपदेश होता है जिसमें प्रसिद्धि होती है। प्रसिद्धि का अर्थ है साध्य को सिद्ध करने की क्षमता यानी साध्य के

Scanned with CamScanner

साथ व्यापकत्व का सम्बन्ध का होना। जिस हेतु में यह गुण नहीं होगा वह सद्हेतु नहीं है। इस प्रकार हेत्वाभास की व्याख्या की गयी है।

जब हम हेत्वाभास के विभिन्न प्रकारों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं तो पाते हैं कि भारतीय तर्कशास्त्रीय परम्परा में हेत्वाभास के पाँच भेदों की चर्चा हुई है और वस्तुतः ये ही भेद मान्य तथा सर्वविदित है, इसलिए इन्हीं के स्वरूप की चर्चा यहाँ हम विस्तृत रूप से करेंगे। ये भेद निम्न प्रकार हैं—

(1) सव्यभिचार (2) विरुद्ध (3) सत्प्रतिपक्ष (4) असिद्ध तथा (5) बाधित।

(1) सव्यभिचार — (Irregular Middle) — किसी अनुमान में हेतु का साध्य के साथ एकान्तिक सम्बन्ध न होकर उसका सम्बन्ध अनेकान्तिक हो, तो वहाँ हेतु में व्यभिचार उत्पन्न हो जाता है और इस कारण अनुमान दोषपूर्ण हो जाता है, जिसे सव्यभिचार हेत्वाभास की संज्ञा दी जाती है। एकान्तिक सम्बन्ध होने का मतलब यह है कि हेतु का सिर्फ साध्य के साथ ही ऐसा अटूट सम्बन्ध हो कि जहाँ भी हेतु हो वहाँ साध्य भी निश्चित तथा निरपवाद रूप में अवश्य पाया जाय। जैसे धूम तथा अग्नि का सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध एकान्तिक इसलिए है कि चूँकि धूम का अग्नि और सिर्फ अग्नि के साथ ही ऐसा अटूट सम्बन्ध है कि जिस भी अधिकरण में धूम होगा, वहाँ अग्नि भी होगी ही — बिना अग्नि के धूम हो ही नहीं सकता। परन्तु 'सींगवाला' तथा 'बैल' के बीच ऐसा एकान्तिक सम्बन्ध नहीं है क्योंकि जो भी सींगवाला होगा वह आवश्यक रूप से बैल ही होगा, ऐसी बात नहीं है — वह अन्य पशु भी हो सकता है। अतः यदि हम अनुमान करते हैं कि वह 'बैल' है, चूँकि वह सींगवाला है, तो ऐसा अनुमान दोषपूर्ण हो जायेगा और इस दोष को सव्यभिचार हेत्वाभास कहा जायेगा।

Scanned with CamScanner

इसे अनैकान्तिक हेत्वाभास भी कहा जाता है। यह त्रिविध है। गंगेश ने सव्यभिचार हेत्वाभास के तीन भेद किए हैं — (i) साधारण (ii) असाधारण तथा (iii) अनुपसंहारी।

(i) साधारण सव्यभिचारी हेत्वाभास में हेतु साध्य के अधिकरण में तो रहता है परन्तु वहाँ भी रहता है जहाँ साध्य नहीं है। यानी हेतु पक्ष, सपक्ष तथा विपक्ष तीनों में पाया जाता है। जैसे —

पुस्तक अनित्य है।

प्रमेय होने से, जैसे पेन, पेन्सिल आदि।

यहाँ पर हेतु "प्रमेय होना"

पक्ष पुस्तक, सपक्ष पेन, पेन्सिल आदि तथा विपक्ष नित्य पदार्थ, आत्मा, ईश्वर आदि में पाये जाने के कारण साधारण 'अनैकान्तिक' या साधारण सव्यभिचारी है।

(ii) असाधारण — इस तरह का सव्यभिचार तब पाया जायगा जब हेतु केवल दिए गये पक्ष में ही मिले और कहीं नहीं मिले जैसे — शब्द नित्य है क्योंकि शब्दत्व है। इसमें हेतु के रूप में 'शब्दत्व' है जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। अतः 'शब्दत्व' और 'नित्यत्व' में व्याप्ति सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता है।

(iii) अनुपसंहारी — यह सव्यभिचार तब पैदा होता है जब हेतु का दृष्टान्त न तो भाव या अस्ति में मिले और न अभाव में मिले। इसमें पक्ष को छोड़कर कुछ नहीं रहता। जैसे - 'सब कुछ उत्तम है क्योंकि सब कुछ की रचना ईश्वर ने की है' यहाँ हेतु साध्य व्याप्ति सम्बन्ध का कोई उदाहरण ही सम्भव नहीं है इसलिए अन्नम् भट्ट ने अन्वय-व्यतिरेक दृष्टान्तरहित हेतु को अनुपसंहारी कहा है।

(2) विरुद्ध (Contradictory middle) — हम जानते हैं कि 'हेतु' के चलते ही साध्य सिद्ध हो सकता है। यदि किसी अनुमान में ऐसा हेतु दिया जाय जो 'साध्य' को उल्टा या विपरीत सिद्ध करे तो वह 'विरुद्ध' कहलायेगा। विरुद्ध-हेतु उस अनुमान में पाया जायगा जिसमें वह साध्य के अस्तित्व को नहीं बल्कि उसके

अभाव को ही पक्ष में सिद्ध करता है जैसे 'शब्द नित्य है क्योंकि उसकी उत्पत्ति होती है'. यहाँ पर 'हेतु' (उत्पत्ति) शब्द के नित्यत्व को नहीं, बल्कि उसके अनित्यत्व को ही साबित करता है क्योंकि यह सर्वविदित है कि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश होता है, इसलिए उत्पन्न होनेवाली चीज कभी नित्य नहीं हो सकती।

(3) सत्प्रतिपक्ष — यदि किसी हेतु का प्रतिपक्षी हेतु विद्यमान हो जो प्रथम हेतु द्वारा सिद्ध किये साध्य का प्रतिपक्षी सिद्ध कर देता हो तो यहाँ अनुमान का दोष स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है और ऐसे दोष को सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का नाम दिया जाता है, इसे न्यायसूत्र में प्रकरणसम कहा गया है 'प्रकरणसम' का साधारण अर्थ है 'प्रकरण अथवा संदर्भ की समानता' और यहाँ अनुमान के दोष के सन्दर्भ में इस नाम की सार्थकता यह है कि यदि किसी हेतु के प्रयोग द्वारा हम कोई साध्य निश्चित करते हैं, किन्तु प्रकरण की समानता के कारण हम ऐसे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाते कि जो साध्य हमने सिद्ध किया है वह यथार्थ अनुमिति है या हेतु का जो विरोधी मौजूद है और जो एक विपरीत अनुमिति पर हमें ले जाता है वह यथार्थ अनुमिति है, ऐसी स्थिति को प्रकरणसम कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम ध्वनि की श्रवणता के आधार पर उसे नित्यता इस अनुमान के आधार पर सिद्ध करते हैं कि 'ध्वनि (या शब्द) नित्य है, चूँकि वह श्रव्य है तो यह ध्वनि की नित्यता का खण्डन करनेवाला दूसरा हेतु 'उत्पत्तिधर्मकत्व' मौजूद है जो इस अनुमान के द्वारा कि 'ध्वनि अनित्य है, चूँकि वह उत्पत्तिधर्मक है', यह सिद्ध करता है कि ध्वनि नित्य न होकर अनित्य है। ऐसी ही स्थिति, सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास कहते हैं।

(4) असिद्ध — जिस हेतु में व्याप्ति और पक्षधर्मता दोनों में से कोई एक निश्चित न हो उसे असिद्ध कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है —

(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध तथा
(3) व्याप्यत्वासिद्ध।

(1) आश्रयासिद्ध — जिस हेतु का आश्रय पक्ष निश्चित न हो उसे आश्रयासिद्ध कहा जाता है जैसे—
बन्ध्यापुत्र सुन्दर है।
पुत्र होने से
यहाँ 'पुत्र होना' हेतु आश्रयासिद्ध है इसलिए क्योंकि आश्रय पक्ष में 'साध्य' सुन्दर होने को सिद्ध करने के लिए हेतु को प्रयुक्त किया जा रहा है पर सिद्ध नहीं है, क्योंकि 'बन्ध्या स्त्री संतान विहीन होने के कारण पुत्रवती नहीं कहला सकती।

(2) स्वरूपासिद्ध — जो हेतु अपने स्वरूप से ही असिद्ध हो उसे स्वरूपासिद्ध हेतु तथा उससे उत्पन्न होनेवाले अनुमान के दोष को स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। जैसे अगर अनुमान हो — 'शब्द गुण है, चूँकि वह द्रव्य है' तो यहाँ शब्द का द्रव्य होना अपने स्वरूप से ही असिद्ध है, चूँकि शब्द द्रव्य नहीं बल्कि श्राव्य होता है।

(3) व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास — जिस हेतु में साधन के साथ उसकी व्याप्ति असिद्ध हो तो ऐसे हेतु को व्याप्यत्वासिद्ध हेतु तथा उसके चलते हुए अनुमान के दोष को व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं— जैसे — पुस्तक क्षणिक है।
सत् होने से।
यहाँ पुस्तक को इसलिए क्षणिक माना गया है कि वह अपनी उत्पत्ति के अनन्तर उत्तर क्षण में नष्ट हो जाती है।

(5) बाधित — जब किसी हेतु के द्वारा प्रमाणित निष्कर्ष अनुमान के अलावा किसी दूसरे प्रमाण के द्वारा (जैसे प्रत्यक्ष शब्द आदि के द्वारा) खण्डित या बाधित हो जाता है तो ऐसा अनुमान दोषपूर्ण माना जाता है और उस दोष को बाधित हेत्वाभास का नाम दिया जाता है जैसे यदि अनुमान हो 'अग्नि शीतल है, चूँकि वह द्रव्य है' तो यहाँ जो हेतु

'द्रव्य' के आधार पर, अग्नि की शीतलता सिद्ध की गयी है, वह प्रत्यक्षतः गलत है, चूँकि अग्नि शीतल नहीं बल्कि उष्ण होती है।

गंगेश के अनुसार बाधित के दस भेद बतलाये गये हैं

(1) पक्षः प्रत्यक्ष बाधित
(2) पक्षः अनुमान बाधित
(3) पक्षः शब्द बाधित
(4) पक्षः साध्य प्रतियोगी बाधित
(5) पक्षः साध्य प्रतियोग्यनुमान बाधित
(6) पक्षः साध्य प्रतियोग्युपमानबाधित
(7) पक्षः साध्य ग्राहक प्रमाण जातिय प्रमाण विरुद्ध
(8) पक्षः हेतु ग्राहक प्रत्यक्ष बाधित
(9) पक्षः हेतु ग्राहकानुमान बाधित
(10) पक्षः हेतु ग्राहक शब्द बाधित।

इस प्रकार भारतीय प्रमाणशास्त्र में हेत्वाभास के विभिन्न प्रकार देखने को मिलते हैं जिनकी संक्षिप्त व्याख्या की गयी है।

Scanned with CamScanner